**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 97-99**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

# केदारनाथ अग्रवाल : जीवन एवं काव्य–संवेदना का आधार

**डॉ0 जितेन्द्र कुमार बाजपेयी**

सहायक आचार्य– हिन्दी विभाग, पंडित जवाहरलाल नेहरु कॉलेज, बांदा (संबद्ध– बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय– झांसी)(उ0प्र0) भारत

**Received-27.08.2025, Revised-05.09.2025, Accepted-11.09.2025** **E-mail : dr.jitendraajpayee@gmail.com**

***सारांशः*** ***हिंदी कविता के विकास में छायावादोत्तर युग एक ऐसे संक्रमण काल के रूप में सामने आता है, जब कविता ने केवल भावुक सौंदर्य के संसार से निकलकर जीवन की यथार्थ भूमि पर पैर रखा। यह वह समय था जब कवि समाज और व्यक्ति दोनों के संघर्षों से गहरे रूप में जुड़ने लगा। इस युग के कवियों में केदारनाथ अग्रवाल का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे ऐसे कवि हैं जिनकी कविता में जीवन का स्पंदन, संघर्ष का स्वर, श्रम का गौरव, प्रकृति का सौंदर्य और मानवीय मूल्यों की चमक एक साथ मिलती है।***

***केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में 'जीवन–मूल्य' मात्र उपदेश नहीं, बल्कि जीवन का अनुभव हैं। उनके लिए कविता कोई कल्पना नहीं, बल्कि धरती की गंध और श्रम की लय से निकला हुआ सत्य है। वे मानते थे कि जीवन की सार्थकता तभी है जब मनुष्य प्रेम, श्रम, संघर्ष, समानता और मानवता जैसे मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारे।***

***कुंजीभूत शब्द–*** **मानवतावाद का विकास, जन्म–भूमि, मातृभूमि, राष्ट्र का गठन, मौलिक संबंध, उपनिवेशवाद, हिंदू आदर्श, स्वार्थी ।**

**केदारनाथ अग्रवाल : जीवन एवं काव्य–संवेदना का आधार –** केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल 1911 को उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में हुआ था। बुंदेलखंड की धरती ने उन्हें जो कठोर यथार्थ, प्रकृति की निकटता और श्रमशील जीवन का अनुभव दिया, वही उनकी कविता का मूल स्रोत बना। वे पेशे से अधिवक्ता रहे, परंतु मन से कवि और कर्म से जन–संवेदना के प्रहरी।

उनकी प्रमुख काव्य–कृतियाँ हैं : युग का मोल, अणिमा, धरती की पकड़, अपनी धरती अपने लोग, संपूर्ण केदारनाथ अग्रवाल काव्य आदि।

उनकी काव्य–दृष्टि में मनुष्य सबसे पहले आता है। वे व्यक्ति के दुःख–सुख, प्रेम, श्रम और संघर्ष को जीवन की मूल भित्ति मानते हैं। इसीलिए उनकी कविता में 'जीवन–मूल्य' किसी आदर्शवादी उपदेश की तरह नहीं, बल्कि अनुभवजन्य यथार्थ के रूप में प्रकट होते है।

1. **श्रम और संघर्ष का मूल्य –** केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में सबसे प्रमुख जीवन–मूल्य श्रम और संघर्ष है। उनके लिए श्रम ही जीवन का सौंदर्य है, संघर्ष ही जीवन की गरिमा। वे कवि हैं किसान, मजदूर और मेहनतकश जनता के। उनकी प्रसिद्ध कविता 'मजदूर' में वे लिखते हैं :

**"हाथों में ग्रीस लगी है,**
**पांवों में धूल भरी है,**
**फिर भी इनकी हंसी में,**
**जीवन की रसभरी लहर है।"**

यहां कवि मजदूर के रूप में उस व्यक्ति को देखता है, जो अपनी मेहनत से सृष्टि को गतिमान रखता है। वह सौंदर्य उस ग्रीस और धूल में भी देखता है, जो समाज के लिए त्याग और सृजन का प्रतीक है। उनकी कविताओं में श्रम केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवन की मर्यादा है। 'धरती की पकड़' में वे कहते हैं :

**"धरती की पकड़ में जो बंधा है,**
**वही सच्चा, वही सृजनकर्ता है।"**

यहाँ धरती की पकड़ से आशय उस व्यक्ति से है, जो धरती से जुड़ा है, श्रमशील है और जो अपनी मेहनत से ही अपनी पहचान बनाता है।

2. **प्रेम का जीवन–मूल्य –** केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में प्रेम एक अत्यंत व्यापक और मानवीय मूल्य है। यह प्रेम केवल स्त्री–पुरुष के आकर्षण तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन और प्रकृति के हर तत्व में व्याप्त है। उनकी प्रेम कविताएँ जैसे 'ज्योति के फूल', 'पंख और पत्थर', 'केदार के प्रेमगीत' आदि में प्रेम जीवन का सौंदर्य भी है और उसकी शक्ति भी।

**"तुम्हारे हाथ में मेरा हाथ,**
**यही सबसे बड़ा विश्वास है।"**

यह विश्वास के रूप में प्रेम को देखने की दृष्टि है। यह प्रेम मनुष्य को जीवंत रखता है, संघर्ष में सहारा देता है और समाज में नैतिक संबंधों को दृढ़ करता है। उनकी प्रेम–दृष्टि में नारी केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं, बल्कि शक्ति और सृजन का रूप है। वे नारी को जीवन की सहयात्री मानते हैं। उनकी कविताओं में स्त्री का चित्रण दया की पात्रा के रूप में नहीं, बल्कि एक कर्मठ, आत्मनिर्भर और जीवंत व्यक्तित्व के रूप में हुआ है।

3. **प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सह– अस्तित्व का मूल्य –** केदारनाथ अग्रवाल की कविता का एक बड़ा हिस्सा प्रकृति–संबंधी है। पर यह प्रकृति–चित्रण मात्र रमणीय दृश्य नहीं, बल्कि जीवन का दार्शनिक अनुभव है। वे प्रकृति में जीवन का विस्तार देखते हैं। उनके लिए पहाड़, नदियाँ, पेड़, फूल, मिट्टी- सब जीवित हैं और मनुष्य के सहचर हैं। उनकी कविता 'नदी' में यह संवेदना स्पष्ट दिखती है :

**"बहती रहो, बहती रहो नदी,**
**तुममें ही मेरा जीवन गाता है।"**

यहाँ 'नदी' जीवन की सतत गतिशीलता का प्रतीक है। कवि मनुष्य और प्रकृति के बीच सह–अस्तित्व के मूल्य को रेखांकित करता है। वे पर्यावरण और जीवन के बीच संतुलन के समर्थक हैं : जो आज के युग में अत्यंत प्रासंगिक है।

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

4. **समानता और सामाजिक न्याय का मूल्य** – केदारनाथ अग्रवाल समाज की वर्ग–व्यवस्था और असमानताओं से पीड़ित यथार्थ को भलीभांति पहचानते हैं। वे मानते हैं कि जीवन तब तक सार्थक नहीं जब तक समाज में समानता और न्याय की स्थापना न हो। उनकी कविता 'अपनी धरती अपने लोग' में वे कहते हैं :

**"धरती सबकी है,**
**पर फल क्यों केवल कुछ के पास?"**

यह प्रश्न ही उनके सामाजिक दृष्टिकोण की दिशा तय करता है। वे श्रमिकों, किसानों, दलितों और वंचितों के अधिकारों की बात करते हैं। उनके काव्य में समानता का मूल्य वर्गीय चेतना के रूप में प्रकट होता है। वे समाज के शोषित वर्ग को आवाज देते हैं और यह बताते हैं कि सच्चा जीवन–मूल्य मानव–मानव के बीच समानता और न्याय में निहित है।

5. **देशभक्ति और मानवता का मूल्य** – केदारनाथ अग्रवाल का कवि–हृदय केवल व्यक्ति या समाज तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्र और मानवता की व्यापक चेतना से ओतप्रोत है। उनके लिए देशप्रेम जीवन का आवश्यक मूल्य है। उनकी कविता 'भारत मेरी माता' में वे लिखते हैं :

**"यह भूमि मेरी जननी है,**
**इस पर चलना ही पूजा है।"**

यहाँ देशभक्ति केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि कर्मठता से जुड़ी है। वे कहते हैं कि देश की सच्ची सेवा श्रम, ईमानदारी और नागरिक उत्तरदायित्व से होती है।

उनकी कविताओं में मानवता का भाव भी इसी राष्ट्रीय चेतना से जुड़ता है। वे विश्व–मानव के रूप में मनुष्य को देखना चाहते हैं : एक ऐसा मनुष्य जो सीमाओं से परे हो और करुणा, सहयोग तथा प्रेम से भरा हो।

6. **आशा और सकारात्मक दृष्टिकोण का मूल्य** – केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ निराशा या पलायन की नहीं हैं। उनमें जीवन के प्रति आशा और सकारात्मक दृष्टि गहराई से विद्यमान है। वे कहते हैं :

**"अंधेरों में भी खोजता हूँ रोशनी,**
**क्योंकि जीवन हार मानता नहीं।"**

यह पंक्तियाँ उनके जीवन–दर्शन को उद्घाटित करती हैं। वे कठिनाइयों में भी उजाला ढूंढते हैं, संघर्षों में भी सौंदर्य देखते हैं। यही उनकी काव्य–संवेदना का मूल जीवन–मूल्य है : आशा में आस्था।

7. **सौंदर्यबोध और कला का मूल्य** – यद्यपि वे यथार्थवादी कवि हैं, परंतु उनकी कविता में सौंदर्य का अभाव नहीं। उनका सौंदर्यबोध कृत्रिम नहीं, बल्कि श्रम और जीवन की सहजता से उपजा हुआ है। वे सौंदर्य को केवल फूलों में नहीं, बल्कि 'पसीने की चमक' में देखते हैं। उनके लिए कला का मूल्य तभी है, जब वह जीवन के साथ जुड़ी हो।

**"कला नहीं यदि जीवन से जुड़ी,**
**तो वह केवल शब्दों की जड़ी।"**

इस दृष्टि से उनकी कविता कला के साथ–साथ नैतिक और मानवीय दायित्व का निर्वाह करती है।

8. **नारी–सशक्तिकरण का मूल्य** – केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में स्त्री का चित्रण अत्यंत सकारात्मक रूप में हुआ है। वे नारी को गृहिणी के संकुचित दायरे से निकालकर सृजन और श्रम के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करते हैं। उनकी कविता 'स्त्री' में वे कहते हैं:

**"वह खेतों में भी है,**
**और घर में भी।**

वह जीवन की पहली पुकार है।" यहाँ स्त्री को सृजन की प्रतीक और जीवन की आधारशिला बताया गया है। यह दृष्टि समाज में स्त्री–पुरुष समानता के मूल्य को पुष्ट करती है।

9. **नैतिकता और सत्यनिष्ठा का मूल्य** – केदारनाथ अग्रवाल की काव्य–दृष्टि में नैतिकता केवल धर्म–संहिता नहीं, बल्कि आचरण की सच्चाई है। वे कहते हैं कि जीवन की सफलता ईमानदारी और सत्य में है। उनकी कविताओं में झूठ, पाखंड, शोषण और अन्याय के प्रति गहरी नफरत मिलती है। वे कहते हैं :

**"सत्य कठिन है,**
**पर वही पथ है,**
**जो जीवन को अमृत बनाता है।"**

यह नैतिक मूल्य उनकी समस्त कविताओं में एक अदृश्य सूत्र के रूप में विद्यमान है।

10. **ग्रामीण जीवन और धरती से जुड़ाव का मूल्य** – केदारनाथ अग्रवाल ने गाँव, खेत, किसान, नदी, पहाड़ और मिट्टी के माध्यम से भारतीय जीवन का जो चित्र खींचा है, वह उनके गहरे धरती–संबंध को दर्शाता है। उनकी कविताओं में 'धरती' केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि जीवन की आत्मा है। वे कहते हैं :

**"मैं धरती से जन्मा कवि हूँ,**
**उसकी गंध मेरी सांसों में है।"**

यह धरती से जुड़ाव का मूल्य आज के वैश्वीकरण और शहरीकरण के दौर में भी एक गहरी प्रेरणा प्रदान करता है।

**जीवन–मूल्यों की सार्थकता : केदारनाथ अग्रवाल की दृष्टि में** – केदारनाथ अग्रवाल के लिए जीवन–मूल्य कोई अमूर्त विचार नहीं, बल्कि व्यवहार का हिस्सा हैं। उनकी कविताएँ बताती हैं कि सच्चा जीवन वही है, जिसमें :

1. श्रम और सृजन का सम्मान हो,
2. प्रेम और करुणा का भाव हो,
3. समानता और न्याय की भावना हो,
4. प्रकृति और मनुष्य के बीच सामंजस्य हो,
5. आशा और सत्य की आस्था बनी रहे।

इन मूल्यों को वे केवल व्यक्तिगत जीवन में नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में भी आवश्यक मानते हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

**आलोचकों की दृष्टि से केदारनाथ अग्रवाल के जीवन–मूल्य –** हिंदी आलोचना ने भी केदारनाथ अग्रवाल को जीवन–मूल्यनिष्ठ कवि माना है।

डॉ. नामवर सिंह के अनुसार : "केदारनाथ अग्रवाल की कविता में धरती की सोंधी गंध है, जो हमें मनुष्य होने का बोध कराती है।"

डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं : "उनकी कविता मनुष्य के श्रम और संघर्ष की गाथा है। यह कविता हमें जीवन के प्रति विश्वास सिखाती है।"

डॉ. नगेन्द्र ने कहा है : "केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में जीवन के मूल तत्वों की प्रतिष्ठा है : प्रेम, श्रम, संघर्ष और सौंदर्य।"

इन सभी समीक्षाओं से यह सिद्ध होता है कि उनके काव्य का केंद्र 'जीवन' और उसकी सार्थकता है।

**निश्कर्श –** केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ हिंदी साहित्य में जीवन–मूल्य की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। वे कवि हैं जो जीवन को धरती से जोड़ते हैं, मनुष्य को उसके श्रम और प्रेम से परिचित कराते हैं।

उनके काव्य में जीवन केवल जीने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सृजन, संघर्ष और सौंदर्य का संगम है। वे सिखाते हैं कि जीवन का अर्थ है : धरती से जुड़ना, मनुष्य से प्रेम करना और सच्चाई के साथ जीना।

आज जब भौतिकता और स्वार्थ के युग में मानवीय मूल्य क्षीण हो रहे हैं, केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ हमें याद दिलाती हैं कि जीवन की असली गरिमा श्रम, प्रेम, करुणा और नैतिकता में ही निहित है। उनका काव्य जीवन के मूलभूत आदर्शों का पुनर्स्मरण है :

**"धरती से सीखो जीना,**
**मिट्टी से सीखो नम्रता,**
**और श्रम से सीखो सृजन।"**

## सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, केदारनाथ कृ धरती की पकड़, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. अग्रवाल, केदारनाथ कृ अपनी धरती अपने लोग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. शर्मा, रामविलास कृ आधुनिक हिंदी कविता की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. सिंह, नामवर कृ कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन।
5. नगेन्द्र कृ हिंदी साहित्य का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. मिश्र, धर्मवीर कृ केदारनाथ अग्रवाल का काव्य और यथार्थ चेतना, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
7. त्रिपाठी, हरिशंकर कृ आधुनिक हिंदी कविता का समाजशास्त्र, राजकमल प्रकाशन।

*****